स्टार पॉइंट वाले पैराग्राफ प्रीललम्स एग्जाम के ललए अति महत्वपूर्ण हैं

Result Mitra IAS/PCS Daily Magazine Content

भारत कोकिला–सरोजिनी नायडू

चर्चा में क्यों ?

- 13 फरवरी को भारत के स्वतंत्रता के बाद संयुक्त प्रांत की पहली महिला राज्यपाल, राजनीतिक कार्यकर्ता, कवि सरोजिनी नायडू के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- सरोजिनी नायडू के महिलाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान एवं महिलाओं के अधिकारों के लिए उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के कारण उनके जन्म दिवस 13 फरवरी को वर्ष 2014 से "राष्ट्रीय महिला दिवस" मनाने की शुरुआत की गई।
- वर्ष 2014 से प्रतिवर्ष सरोजिनी नायडू के जन्म दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

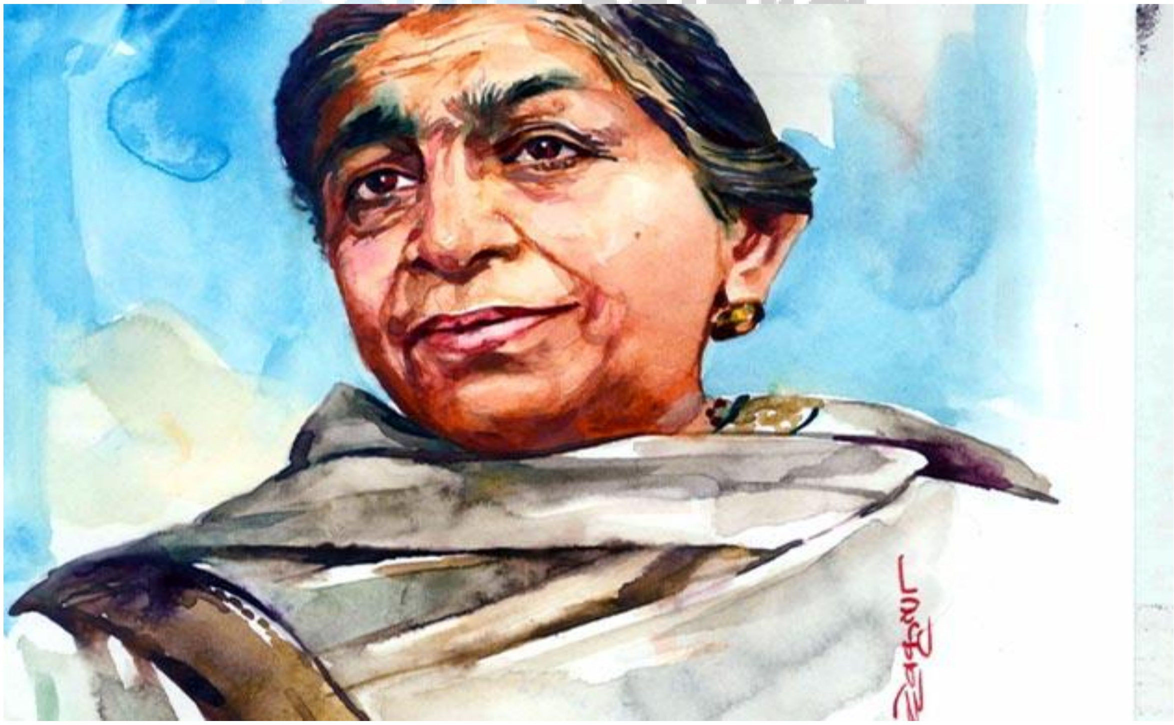

जीवनी :

- सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में हुआ था।
- सरोजिनी नायडू के पिता अद्योरनाथ चट्टोपाध्याय हैदराबाद में निजाम कॉलेज के प्रिंसिपल थे तथा उनकी मां वरदा सुंदरा देवी एक बंगाली लेखिका और नर्तकी थी।
- सरोजिनी नायडू अपने 8 भाई–बहनों में सबसे बड़ी थी तथा उनके भाई वीरेंद्र नाथ चट्टोपाध्याय एक क्रांतिकारी तथा दूसरा भाई हरिंद्रनाथ चट्टोपाध्याय कवि, नाटककार और अभिनेता थे।

शिक्षा :

- सरोजिनी नायडू ने वर्ष 1891 में केवल 12 वर्ष की उम्र में दसवीं की परीक्षा सर्वोच्च रैंक से पास की।
- सरोजिनी नायडू ने ग्रेजुएशन की डिग्री निजाम कॉलेज से प्राप्त की तथा यहीं से छात्रवृत्ति के साथ इंग्लैंड के किंग्स कॉलेज (लंदन) और ग्रिटर्न कॉलेज (कैंब्रिज) में अध्ययन किया।

शादी :

- वर्ष 1898 में सरोजिनी नायडू की शादी गोविंद राजू नायडू नामक एक डॉक्टर से हुई।
- सरोजिनी नायडू की गोविंद राजू नायडू से मुलाकात लंदन में अध्ययन के दौरान हुई थी।
- सरोजिनी नायडू के पांच बच्चे थे जिनमें से उनकी सबसे बड़ी बेटी पदमजा ने भारत छोड़ो आंदोलन में भी भाग लिया था।

कवि के रूप में सरोजिनी नायडू :

- सरोजिनी नायडू को कविता लिखने की प्रेरणा अपनी मां वरदा सुंदरा देवी से मिली, जो एक बंगाली लेखिका थी।
- सरोजिनी नायडू ने 12 वर्ष की उम्र में ही लिखना शुरू कर दिया।
- सरोजिनी नायडू की कविता अंग्रेजी में लिखी गई, जो मुख्य रूप से गीतात्मक कविता के रूप में थी।

- वर्ष 1905 में “द गोल्डन थ्रेशोल्ड” नामक उनकी कविताओं की पहली पुस्तक लंदन में प्रकाशित हुई।
- उनकी दूसरी राष्ट्रवादी कविताओं की पुस्तक “द बर्ड ऑफ टाइम” 1912 में लंदन और न्यूयॉर्क में प्रकाशित हुई।
- सरोजिनी नायडू के जीवनकाल में प्रकाशित नई कविताओं की अंतिम पुस्तक “द ब्रोकन विंग” 1917 में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान प्रकाशित हुई।
- “द ब्रोकन विंग” नामक कविता का संग्रह भारतीय लोगों को प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सेना के बलिदानों को याद रखने के लिए प्रेरित करती है।
- इस कविता संग्रह को सर्वप्रथम सरोजिनी नायडू ने 1915 ई. में हैदराबाद में लेडिज वॉर रिलीफ एसोसिएशन के समक्ष सुनाया था।

सरोजिनी नायडू की अन्य प्रमुख रचना :

1. द सॉन्ग ऑफ द पालकी बियरर्स (1919)
2. सरोजिनी नायडू के भाषण और लेखन (1920)
3. मुहम्मद अली जिन्ना : एकता के राजदूत (1922)
4. द सेप्ट्रेड फ्लूट : सॉन्ग ऑफ़ इंडिया (1928)
5. द फेदर ऑफ़ द डोन (1961 में उनकी बेटी पदमजा नायडू द्वारा संपादित)

- महात्मा गांधी ने सरोजिनी नायडू की काव्य कृतियों से प्रभावित होकर उन्हें “भारत कोकिला” (नाइटिंगेल ऑफ़ इंडिया) की संज्ञा दी।

राजनीतिक जीवन :

- वर्ष 1904 की शुरुआत में ही सरोजिनी नायडू भारतीय स्वतंत्रता और महिला अधिकारों को बढ़ावा देने वाली एक लोकप्रिय वक्ता बन गई।
- वर्ष 1906 में पहली बार सरोजिनी नायडू ने कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सम्मेलन एवं भारतीय सामाजिक सम्मेलन को संबोधित किया।
- वर्ष 1911 में भारत में प्लेग महामारी के दौरान सरोजिनी नायडू की उत्कृष्ट सेवा के लिए ब्रिटिश सरकार ने उन्हें “केसर–ए–हिंद” नामक पदक से सम्मानित किया।

- हालांकि अप्रैल 1919 के जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में उन्होंने यह पदक लौटा दिया।
- वर्ष 1914 में सरोजिनी नायडू की मुलाकात लंदन में महात्मा गांधी से हुई, जिसके बाद से वे पूर्ण रूप से देश की आजादी के आंदोलनों से जुड़ गई।
- वर्ष 1917 में सरोजिनी नायडू ने भारतीय महिला आंदोलन की नेत्री मुथुलक्ष्मी रेड्डी के साथ मिलकर “महिला भारतीय संघ” की स्थापना की।
- वर्ष 1917 में ही सरोजिनी नायडू ने अपनी सहयोगी एनी बेसेंट के साथ मिलकर (जो समय होमरूल लीग और भारतीय महिला संघ की अध्यक्ष थी) लंदन में संयुक्त चयन समिति के सामने सार्वभौमिक मताधिकार की वकालत की।
- वर्ष 1918 में सरोजिनी नायडू ब्रिटिश शासन के खिलाफ गांधीजी के अहिंसक प्रतिरोध के सत्याग्रह आंदोलन में शामिल हो गई।
- वर्ष 1920 में उन्होंने असहयोग आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- वर्ष 1925 में सरोजिनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष बनी।
- वर्ष 1930 में सरोजिनी नायडू गांधीजी के साथ नमक सत्याग्रह में शामिल हुई।
- 6 अप्रैल 1930 को गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद सरोजिनी नायडू ने ही इस अभियान का नेतृत्व किया।
- वर्ष 1931 में वायसराय लॉर्ड इरविन की अध्यक्षता में हुए दूसरे गोलमेज सम्मेलन में सरोजिनी नायडू ने अन्य कांग्रेस पार्टी के नेताओं के साथ भाग लिया।
- वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया जहां उन्हें 21 महीने तक जेल में रखा गया।

संयुक्त प्रांत के राज्यपाल :

- ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1947 में सरोजिनी नायडू को भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने संयुक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश) का राज्यपाल नियुक्त किया।
- संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) के राज्यपाल के पद पर नियुक्ति के साथ ही वह भारत की पहली महिला राज्यपाल बन गई।

- इस पद पर वह अपनी मृत्यु (मार्च 1949) तक बनी रही।

महिला आंदोलन में सरोजिनी नायडू का योगदान :

- सरोजिनी नायडू ने राष्ट्रवादी आंदोलनों में भाग लेने के साथ-साथ महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए अपनी कविता और वक्ता कौशल के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- वर्ष 1906 में सरोजिनी नायडू ने भारतीय महिलाओं की शिक्षा की वकालत करने के लिए कलकत्ता में सामाजिक परिषद को संबोधित किया, जिसमें उन्होंने दावा किया कि भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन की सफलता बिना महिलाओं के समर्थन के व्यर्थ है।
- उन्होंने अपने भाषण में तर्क दिया कि भारत का राष्ट्रवाद महिलाओं के अधिकारों पर निर्भर करता है तथा भारत की मुक्ति को महिलाओं की मुक्ति से अलग नहीं किया जा सकता है।
- उनके भाषणों एवं महिला विकास में जोर देने के कारण ही महिला आंदोलन, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समानांतर विकसित हुआ।
- 1917 में महिला भारतीय संघ की स्थापना ने महिलाओं को उनकी शिकायतों पर चर्चा करने और उनके अधिकारों की मांग करने के लिए एक मंच प्रदान किया।
- वर्ष 1917 में ही सरोजिनी नायडू ने महिलाओं के एक प्रतिनिधिमंडल के प्रवक्ता के रूप में भारत के राज्य सचिव एडमिन मोटेंगु और भारत के वायसराय लॉर्ड चेम्सफोर्ड से मुलाकात की।
- इस प्रतिनिधिमंडल के प्रवक्ता के रूप में सरोजिनी नायडू ने भारत में स्वशासन की शुरुआत के लिए सार्वभौमिक मताधिकार की मांग रखी।
- वर्ष 1918 में नायडू ने बॉम्बे प्रांतीय सम्मेलन के 18वें सत्र एवं कांग्रेस के विशेष सत्र में महिलाओं के मताधिकार पर एक प्रस्ताव पेश किया।
- 1920 के दशक में सरोजिनी नायडू ने महिलाओं के अधिकारों और राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के साधन के रूप में राष्ट्रवादी आंदोलनों पर अधिक ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया।

- वर्ष 1925 में सरोजिनी नायडू का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला महिला अध्यक्ष बनना यह प्रदर्शित करता है कि महिलाओं के अधिकार के लिए एक राजनीतिक आवाज के रूप में वह कितनी प्रभावशाली थी।
- वर्ष 1964 में 13 फरवरी को सरोजिनी नायडू के जयंती के अवसर पर उनके सम्मान में भारत सरकार ने 15 पैसे का एक स्मारकीय डाक टिकट जारी किया।

Mains–1 : सरोजिनी नायडू की विरासत को याद करने में राष्ट्रीय महिला दिवस का क्या महत्व है ?

या

सरोजिनी नायडू ने भारत में राजनीति और शासन में महिलाओं के लिए बाधाओं को कैसे तोड़ा ?

Result Mitra

हम आपको रिजल्ट देने आये हैं.
Result Mitra
1- UPSC(IAS) COMPLETE GS -5999 ₹.
2- NCERT for IAS/PCS -2499 ₹
3- ESSAY for IAS/PCS- 2199 ₹
4- UPSC PRELIMS TEST SERIES - 1399 ₹
5- सभी राज्यों के लिए टेस्ट सीरीज - 1399 ₹
कोर्स या Test Series के लिए
WhatssApp कीजिये
9235313184, 9235446806